आपातकाल में सृजन फुलवारी

डॉ. प्रीति समकित सुराना

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

डॉ. प्रीति समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-098-8

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र-संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय-15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण-2020, **डॉ.** प्रीति समकित सुराना

मूल्य-50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY DR PRITI SAMKIT SURANA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	शारदे आशीष दो माँ	6
2.	कविमन	7
3.	पीर	8
4.	अस्त व्यस्त	9
5.	प्रेमधुन	10
6.	प्रसार	11
7.	सब है क्षणिक	12
8.	आज़ाद	13
9.	बने घर अगर	14
10.	सत्य का संधान	15
11.	उलझन	16
12.	परिभाषा नारी की	17
13.	जल बचाइये	18
14.	आभार	19
15.	ओ मेरे मनमीत	20
16.	विस्तार	21

शारदे आशीष दो माँ

शारदे आशीष दो माँ
शब्द भाव गीत रचें,
लेखनी में जिन्दगी का
सार होना चाहिए।

देश का अजब हाल
बात बात पे बवाल,
लेखनी से बुराई पे
वार होना चाहिए।

शब्दों में हो रसधार
भावों में अकूट भार,
शस्त्र बिना बुराई की
हार होना चाहिए।

लक्ष्य कोई ऐसा दो जो
साध सकूँ साधना से,
धैर्य से वो लक्ष्य मेरा
पार होना चाहिए।

कविमन

आज मेरा कविमन
रचे घनाक्षरी छंद,
लेखन से मन सदा
धन्य होना चाहिए।

विषय है लेखनी से
कविता के सृजन का,
कलम से प्रवाहित
छंद होना चाहिए।

कविता में भाव रहे
लेखनी से शब्द बहे,
श्रोता सुने काव्य तो
प्रसन्न होना चाहिए।

है काव्य एक साधना
सरस्वती आराधना,
लेखन से लोक हित
सिद्ध होना चाहिए।

पीर

अंखियों से नीर बहे
मन की ये पीर कहे,
मन को मैं समझाऊं
थोड़ा सा तो धीर धरे।

मन तो है बावरा सा
तरसे है प्रेम को ही,
प्रेम सच्चा मिले नहीं
कोई करे तो क्या करे?

ढूंढती है अखिंयां ये
सपनों में अपनों को,
कैसे समझाऊं इसे
रिश्ते कहाँ अब खरे।

रिश्तों में उलझा हुआ
मन न समझ पाया,
अपनों में रहके भी
मोह से ये रहे परे।

अस्त व्यस्त

अस्त व्यस्त है समस्त
सुख सारे हुए ध्वस्त,
फंसा हुआ हर कोई
समय के जाल में।

नई पीढ़ी जाने नही
मोल किसी रीत का भी
सभ्यता ने रंगा रंग
नई चाल ढाल में।

अमन तो भूले सभी
नित नए कांड करें,
हर कोई मिले यहां
नए ही बवाल में।

नीति रीति रंग ढंग
फिर से हो अनुकूल,
ऐसा प्रण करे अब
हम नए साल में।

प्रेमधुन

छेड़ रहे नन्दलाल
नदिया पे ग्वालबाल,
राधा रानी रूठ गई
कान्हा जी मनाइये।

घने जंगलो में गई
गोपियों के संग राधा,
भूल गई राह अब
ढूंढ के तो लाइए।

नित नित नई बातें
राधा रानी झेलती है,
नटखट श्याम उन्हें
ऐसे न सताइये।

राधा रानी विरहन
तड़पे मन ही मन,
सुनने को प्रेमधुन
बंसी तो बजाइये।

प्रसार

कर लेखनी प्रखर
शब्द शब्द ओज भर,
यूँ नहीं किसी से डर
तू बना नया समाज।

रूप तू प्रचंड धर
दुष्टता पे' वार कर,
हो सदैव तू निडर
है यही जरुरी आज।

जो नही हुआ निडर
जाएगा सब बिखर,
बुराई का नाश कर
कर बड़े बड़े काज।

लेखनी की धार पर
भावना प्रसार कर,
तू बसा नया शहर
जहाँ प्रीत का हो राज।

सब है क्षणिक

मिट्टी में ही मिलना है,
चाहे मिले लाख सुख,
सब है क्षणिक यहाँ
ज्ञान होना चाहिए।

कभी दुःख आए भी तो
हारना नहीं हिम्मत,
आया है वो जाएगा ही
भान होना चाहिए।

रात है सिखाती यहीं
नित नई भोर होगी,
भोर में उजाला होगा
ध्यान होना चाहिए।

चाहते हो यदि सुख
लोभ सारे भूल कर,
काम ऐसे करना कि
मान होना चाहिए।

आज़ाद

आज़ाद था नाम और
आज़ादी एक लक्ष्य था,
कांपते शत्रु जिससे
ऐसा जोश था खरा।

अत्याचारी अंग्रेजों के
कानों में बम फोड़े थे,
लाला जी की हत्या हुई
वो ही रोष था भरा।

क्रांतिकारियों के संग
काकोरी अंजाम दिया,
लूट खजाना गोरों का
शीश दोष था धरा।

मां भारती पे हंसके
जान अपनी वार दी,
आज़ाद ने देश हेतु
रण घोष था करा।

बने घर अगर

ईंट ईंट जुड़कर
साथ जब भी हो खड़ी,
न्याय नीति पर बनी
नेक सी दीवार हो।

ख़ुशी का हो एक द्वार
और छत विश्वास की,
भवन ऐसा हो खड़ा
नींव दमदार हो।

सुख दुःख सह सके
साथ मिल बैठकर,
वहां पर एक ऐसा
कक्ष भी तैयार हो।

बस प्रेम ही प्रेम हो
और बाकी कुछ नहीं,
जो बने घर अगर
नेह ही आधार हो।

सत्य का संधान

शिव का पुराण पढ़
मन में करुणा भरो,
शांति यदि पाना है तो
पाप छल से डरो।

याद कर तांडव को
प्रलय से तुम बचो,
शिव से ही शुभ हो के
शान से जियो मरो।

सर्व पूज्य शिव ही हैं
शिव हैं मनभावन,
सत्य शिव सुंदर का
जाप मन से करो।

शिव जी का ध्यान धरो
निज का कल्याण करो,
मोक्ष यदि पाना है तो
सत्य का संधान करो।

उलझन

सह मत डरकर
लड़ अब डटकर,
मत रह बच बच
सच कह रट पट।

तन मन धन सब
रख अब सम कर,
अहम वहम तज
बस कर खटपट।

ठहर ठहर चल
बह मत जल सम,
वजन वहन कर
चल मत सरपट।

उलझन मन भर
हर पल हर घर,
अब हर नटवर
सब डर झटपट।

परिभाषा नारी की

बात हो अधिकार की
या नारी के सम्मान की,
भेद सारे भूलकर
भाग लिख दीजिये।

शक्ति का हो रूप जब
धरे चंडी रूप तब,
बुराई की विनाशिका
आग लिख दीजिये।

सोलह शृंगार करे
जब रति रूप धरे,
साज छेड़ प्रीत भरा
राग लिख दीजिये।

प्रेम और ममता की
प्रतिमूर्ति समता की,
परिभाषा नारी की
त्याग लिख दीजिये।

जल बचाइये

जल जो न रहेगा तो
जीवन कैसे चलेगा,
जीवन बचाना हो तो
जल भी बचाइये।

जल से ही जगत के
काम सारे चलते हैं,
काम के अंजाम हेतु
मुहिम चलाइये।

जल को बचाने हेतु
वृक्षों का होना जरुरी,
आज से ही रोज एक
वृक्ष भी लगाइये।

वृक्षों से है हरियाली
जल से है खुशहाली,
सब मिल दुनिया को
सुन्दर बनाइये।

आभार

सरहद पर सेना
सैनिक समर्पित,
देश यह सुरक्षित
शीश को झुकाइये।

गाँव-गाँव गली-गली
कूड़े कचरे का ढेर,
करता सफाई कर्मी
शुक्र तो मनाइए।

जाग रहे रात-रात
स्वास्थ्य सेवी, डॉक्टर,
महामारी फैल रही
आभार जताइए।

घर से न निकलो तो
यही बड़ा काम होगा,
कुछ नहीं करके भी
साथ यूँ निभाइये।

ओ मेरे मनमीत

सांस सांस हो प्रतीत
रगों में बहे संगीत,
लिख कोई ऐसा गीत
ओ मेरे मनमीत।

प्रीत नहीं राजनीत
कर जरा बातचीत,
सुन मेरी हार जीत
ओ मेरे मनमीत।

जानूं न मैं रीतनीत
काल से न भयभीत,
जीवन रहा है बीत
ओ मेरे मनमीत।

झूठी नहीं मेरी प्रीत
मानी हार तेरी जीत,
प्रीत मेरी है पुनीत
ओ मेरे मनमीत।

विस्तार

मत रह भयभीत
सुन ले ओ मेरे मीत,
यही तो है प्रेम रीत
प्रेम का दे पारावार।

जारी रहे बातचीत
रहे भावना पुनीत,
खेल न यूं हार जीत
बातों को दे दे आधार।

बन प्रेम का प्रणीत
भूलकर के अतीत,
जो गया वो गया बीत
सुखों को दे दे आकार।

लिख रही प्रेम गीत
इसको दे स्वर मीत,
बना आज नई रीत
दे दे प्रेम को विस्तार,..!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

अन्तरा शब्दशक्ति सिर्फ एक प्रकाशन मात्र नहीं बल्कि मेरी वास्तविक शक्ति का ही दूसरा नाम है। मेरे जीवन का लक्ष्य, स्वप्न एवं मेरी अंदर की सारी शक्ति इसमें निहित है। इसी कारण जब भारत में (कोविड १९) वायरस के कारण आपातकाल की घोषणा की गई तो प्रथमतया मुझे बहुत ही घबराहट होने लगी। रोज के समाचार और वायरस की भयावहता से भय लगने लगा। फिर अनायास ही एक भावना ने जन्म लिया कि क्यूं न अपने इस डर को हराने का साधन जुटाया जाए और एक विचार मन में आया कि जो समय मेरे लिए दुष्कर है वह अन्य के लिए भी है किंतु हम तो रचनात्मक लोग है तो नैराश्य हमारा स्वभाव नहीं, यही सोचकर मन में कुछ ऐसा करने की लालसा ने जन्म लिया जो इस काल को हमेशा के लिए यादगार बनाये रखने में समर्थ हो।

मैने सोशल मिडिया के माध्यम से अपनी सूचना का प्रसारण किया। मेरे इस महायज्ञ में मैंने हर रचनाकार को अपनी रचनाओं के साथ ई प्रकाशन हेतु आमंत्रित किया और मुझे बहुत ही अच्छा प्रतिसाद मिला। उन सभी के सहयोग के साथ मेरी छोटी सी कोशिश आप तक पहुंचने एवं इन पलों को हमेशा यादगार बनाये रखने की .....

जिसके लिए अन्तरा शब्दशक्ति परिवार का हार्दिक आभार।

रचनाकार

डॉ. प्रीति समकित सुराना

संपादक एवं संस्थापक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
१५, नेहरू चौक, वारासिवनी
जिला-बालाघाट
Email- pritisamkit@gmail.com
Mobile - 9424765259

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-098-8

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/